

## प्रशिक्षण या अधिगमन अंतरण/स्थानान्तरण (Transfer of Training or Learning)

साधारण अर्थ में शिक्षण-स्थानान्तरण का अर्थ एक शिक्षण का प्रभाव दूसरे शिक्षण पर है। एक विषय के शिक्षण का जो कुछ भी प्रभाव दूसरे विषय के शिक्षण पर पड़ता है, इसे शिक्षण स्थानान्तरण या प्रशिक्षण-स्थानान्तरण कहते हैं। इसी तरह एक क्षेत्र के शिक्षण का जो कुछ भी प्रभाव दूसरे क्षेत्र के शिक्षण पर पड़ता है, इसे शिक्षण स्थानान्तरण कहते हैं। दूसरे शब्दों में, प्रशिक्षण या अधिगमन अंतरण से तात्पर्य पहले सीखे गये कौशल (skills) का वर्तमान कौशल को सीखने पर पड़ने वाले प्रभाव से होता है। जैसे, यदि कोई व्यक्ति ट्रक चलाना सीखकर कार चलाना सीखता हो तो ट्रक चलाना सीखने से यदि कार चलाना सीखने की प्रक्रिया प्रभावित होती है, तो इसे प्रशिक्षण या अधिगमन अंतरण (transfer of training) की संज्ञा दी जाती है।

भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसे भिन्न-भिन्न रूपों में परिभाषित किया है। चैपलिन (Chaplin, 1975) के अनुसार, "एक परिस्थिति के शिक्षण का जो कुछ प्रभाव दूसरी परिस्थिति के शिक्षण पर पड़ता है, उसे स्थानान्तरण कहते हैं।" ("Transfer means learning in one situation carrying over to another situation.")

पोस्टमैन तथा इगन (Postman & Egan, 1996) ने इसी अर्थ में स्थानान्तरण की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "पहले के शिक्षण का जो प्रभाव किसी नवीन-शिक्षण पर पड़ता है उसे प्रशिक्षण-स्थानान्तरण की संज्ञा दी जाती है।" ("The effect of past learning is designated as transfer of learning.")

प्रभाव के स्वरूप के आलोक में प्रशिक्षण अंतरण के निम्नांकित तीन प्रारूप होते हैं:-

**1. धनात्मक अंतरण (Positive transfer):-** जब पहले सीखे गये कौशल या विषय-वस्तु से नये कौशल या विषय-वस्तु को सीखने में सहायता मिलती है, तो इसे धनात्मक अंतरण कहा जाता है। जैसे, यदि किसी व्यक्ति को हिन्दी भाषा सीखने के बाद भोजपुरी भाषा को सीखने में उससे मदद मिलती है, तो यह धनात्मक अंतरण का उदाहरण होगा।

**2. ऋणात्मक अंतरण (Negative transfer):-** जब पहले सीखे गये कौशल या विषय-वस्तु से नये कौशल या विषय-वस्तु को सीखने में बाधा पहुँचती है, तो इसे ऋणात्मक अंतरण कहा जाता है। जैसे संस्कृत भाषा सीखकर अंग्रेजी भाषा सीखने में कोई विशेष तरह की कठिनाई या बाधा महसूस करता है, तो यह ऋणात्मक अंतरण का उदाहरण होगा। जनवरी महीने में जब साल की शुरुआत होती है, तो व्यक्ति प्रायः तिथि लिखते समय पुराने वर्ष को ही लिख देता है। यह भी ऋणात्मक अंतरण का उदाहरण है जो आदत-संबंधी बाधा (habit interference) के बारे में सूचना देता है।

**3. शून्य अंतरण (Zero transfer):-** जब पहले सीखे गये कौशल का प्रभाव वर्तमान कौशल के सीखने पर न तो धनात्मक और न ही ऋणात्मक होता है, तो इस शून्य अंतरण कहा जाता है। जैसे साइकिल चलाने के शिक्षण से हिन्दी या अंग्रेजी सीखने में न मदद मिलेगी और न बाधा पहुंचेगी।

धनात्मक स्थानान्तरण के भी दो प्रकार हैं:- (i) द्विपार्श्विक स्थानान्तरण (bilateral transfer) तथा (ii) अद्विपार्श्विक स्थानान्तरण (non-bilateral transfer)। जब धनात्मक स्थानान्तरण शरीर के दो अंगों के बीच होता है तो इसे द्विपार्श्विक धनात्मक स्थानान्तरण (bilateral positive transfer) कहते हैं। जैसे-दाहिने हाथ से A,B,C,D अथवा क, ख, ग, घ आदि सीखने के बाद बायें हाथ से इन्हें सीखना आसान बन जाता है। स्मरण रखना चाहिए कि द्विपार्श्विक स्थानान्तरण नकारात्मक भी हो सकता है। जैसे-दाहिने हाथ का चालन (driving) बायें हाथ के चालन में हानिकारक होगा।

दूसरी ओर जब धनात्मक स्थानान्तरण दो परिस्थितियों के शिक्षणों के बीच होता है, तो इसे अद्विपार्श्विक धनात्मक स्थानान्तरण (non-bilateral positive transfer) कहते हैं। जैसे-लैटिन का शिक्षण अंग्रेजी सीखने में, हिन्दी का शिक्षण संस्कृत सीखने अथवा उर्दू का शिक्षण फारसी सीखने में सहायक होता है।

इसके अतिरिक्त अंतरण (transfer) को दो सामान्य भागों में बाँटा गया है:-

1. सामान्य अंतरण (General transfer) तथा
2. विशिष्ट अंतरण (Specific transfer)।

इन दोनों तरह के अंतरण की व्याख्या निम्नांकित है-

**1. सामान्य अंतरण (General transfer):-** सामान्य अंतरण से तात्पर्य वैसे अंतरण से होता है जिसकी उत्पत्ति किसी विशिष्ट कारक से नहीं होती है। यह एक तरह का सामान्य श्रेणी का अंतरण होता है जहाँ कोई स्पष्ट एवं विशिष्ट कारक की पहचान नहीं होती है। इसे अविशिष्ट अंतरण (nonspecific transfer) भी कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने सामान्य अंतरण के दो प्रकार बतलाये हैं- सरगर्मी (warm up) तथा सीखने का अधिगम (learning to learn)। सरगर्मी से तात्पर्य सीखने के एकांशों, उपकरण, परिस्थिति आदि के साथ समायोजन (adjustment) से होता है जो आरंभिक प्रयासों में होता है तथा कुछ प्रयास हो जाने के बाद अपने आप समाप्त हो जाता है। सीखने का अधिगम से तात्पर्य सीखने के मौलिक कौशल, उत्तम विधि, उपाय (strategies) आदि के सीखने से होता है जो अभ्यास के साथ व्यक्ति में विकसित होता है। इससे व्यक्ति में एक तरह का स्थायी परिवर्तन होता है। अतः सरगर्मी तथा सीखने के अधिगम में मौलिक अंतर सामयिक निरन्तरता (temporal persistence) के ख्याल से होता है। सरगर्मी का प्रभाव अस्थायी होता है। जैसे ही अभ्यास समाप्त होता है, सरगर्मी के प्रभाव से होने वाला लाभ भी तेजी से समाप्त हो जाता है। परंतु सीखने

का अधिगम का प्रभाव अधिक स्थायी होता है। जब व्यक्ति किसी पाठ को सीखने के लिए मौलिक, कुशल विधि तथा उपाय ढूँढ लेता है, तो वह उसे सदा याद रखता है और उसका उपयोग करते रहता है।

**2. विशिष्ट अंतरण (Specific Transfer):-** विशिष्ट अंतरण से तात्पर्य वैसे अंतरण से होता है जो विशिष्ट कारक जैसे उद्दीपक समानता (stimulus similarity), अनुक्रिया समानता (response similarity), उद्दीपक विभिन्नता (stimulus difference), अनुक्रिया विभिन्नता (response differentiation) आदि के कारण हो जाता है। इस तरह के अंतरण में अंतरण का कारण स्पष्ट होता है। जब कभी भी व्यक्ति कुछ सीखता है तो उसमें उद्दीपक अनुक्रिया साहचर्य (stimulus-response associations) की श्रृंखला होती है। यदि पहले सीखे जाने वाले कार्य 'अ' का अंतरण प्रभाव बाद में सीखे जाने वाले कार्य 'ब' पर पड़े तो इसे विशिष्ट अंतरण कहते हैं। कार्य 'अ' का सीखना कार्य 'ब' के सीखने को सरल या अधिक कठिन या बिना किसी प्रभाव का बना सकता है। विशिष्ट अंतरण प्रभाव पहले सीखे जाने वाले कार्य और दूसरे कार्य के बीच समानता असमानता पर निर्भर करता है।

Dr. Hameeda Shaheen, Deptt. of Psychology, Raja Sansh College, Swat